प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक योग्यता एवं शिक्षण अनुभव का मूल्यों पर प्रभाव

चंद्र शेखर यादव [1]
डॉ. शुभराम [2]
[1]शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र विभाग, श्री जे.जे.टी. विश्वविद्यालय, चुड़ेला, झुंझुनूं, राजस्थान
[2]ऐसिसटेंट प्रोफेसर, शिक्षा शास्त्र विभाग, श्री जे.जे.टी. विश्वविद्यालय, चुड़ेला, झुंझुनूं, राजस्थान

सारांश
यह अध्ययन प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के मूल मूल्यों का अन्वेषण करता है और यह जाँच करता है कि ये मूल्य उनकी शिक्षण क्षमताओं, दृष्टिकोणों और व्यक्तित्वों को कैसे प्रभावित करते हैं। इसका उद्देश्य व्यक्तिगत विश्वासों और व्यावसायिक गुणों के अंतर्संबंध को समझना है, और अंततः शैक्षिक प्रथाओं और शिक्षक विकास रणनीतियों को बेहतर बनाना है। आज के शैक्षिक परिदृश्य में, मूल्य–उन्मुख शिक्षण पर ज़ोर दिया जा रहा है, जो शिक्षण वातावरण को आकार देने में शिक्षकों के व्यक्तिगत मूल्यों के महत्व को स्वीकार करता है। अपने स्वयं के दृष्टिकोणों को एकीकृत करके, शिक्षक छात्रों का प्रभावी मार्गदर्शन कर सकते हैं, नैतिक विकास को बढ़ावा दे सकते हैं और शिक्षार्थियों को विविध दृष्टिकोणों की व्यापक समझ विकसित करने में मदद कर सकते हैं। इस अध्ययन में उत्तर प्रदेश के जौनपुर के 600 प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का नमूना लिया गया, जिसमें विभिन्न श्रेणियों में प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण पद्धति का उपयोग किया गया। नमूनाकरण प्रक्रिया में स्कूल का स्थान शहरी और ग्रामीण, स्कूल प्रबंधन–सरकारी और निजी और लिंग जैसे कारकों पर विचार किया गया।
कुंजीशब्दः प्राथमिक विद्यालय शिक्षक, प्रभावशीलता, मूल्य।

1. प्रस्तावना

"सफल व्यक्ति बनने का प्रयास न करें, बल्कि मूल्यवान व्यक्ति बनें" – अल्बर्ट आइंस्टीन

किसी व्यक्ति की भलाई के लिए सबसे अधिक वांछनीय चीजें उसके व्यक्तिगत मूल्य माने जाते हैं, जो उसके गहरे विश्वासों, जीवन के अनुभवों, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और व्यक्तिगत आकांक्षाओं पर आधारित होते हैं, जो यह तय करते हैं कि वह किन चीजों को प्राथमिकता देता है और सबसे अधिक क्या चाहता है।

अधिक व्यापक, उदार, व्यावहारिक और व्यावहारिक दृष्टिकोण विभिन्न क्षेत्रों में हमारी समझ और प्रभावशीलता को महत्वपूर्ण रूप से बढा सकते हैं।

1. "मूल्य" के व्यक्तिपरक और उद्देश्यपरक दृष्टिकोणों के बीच संबंध को पहचानता है।
2. अपने परिवेश के साथ किसी भी व्यक्ति के समायोजन पर ध्यान दिलाता है।
3. "मूल्य" की व्यक्त और निहित दोनों भावनाओं पर बल देता है।
4. समूह की मूल्य तुलनाओं के संबंध में सामान्यीकरण करने के लिए एक उपयोगी आधार प्रदान करता है। और
5. व्यक्ति या समाज की उपेक्षा नहीं करता, बल्कि मूल्य को व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों रूपों में स्वीकार करता है।

अयंगर (1942) कहते हैं कि "मूल्य किसी वस्तु के चिंतन से उत्पन्न होता है, जो इच्छाओं से प्रेरित होता है, जो व्यक्ति के आंतरिक उद्देश्यों को बाहरी वास्तविकताओं से जोड़ती हैं। यह प्रक्रिया इस बात पर प्रकाश डालती है कि कैसे व्यक्तिगत लालसाएँ धारणा को प्रभावित करती हैं, और साधारण अवलोकन को आंतरिक आकांक्षाओं और आसपास के वातावरण के बीच परस्पर क्रिया में निहित एक सार्थक मूल्यांकन में बदल देती हैं।"

मूल्य मूलभूत सांस्कृतिक मानकों के रूप में कार्य करते हैं जो हमारे आचरण और निर्णय लेने में मार्गदर्शन करते हैं। ये मूल्य विवेक, विश्वासों और आदर्शों द्वारा आकार लेते हैं और एक नैतिक दिशासूचक प्रदान करते हैं जो व्यक्तियों को अपने कार्यों को मूल सिद्धांतों के अनुरूप ढालने में मदद करता है। इन मूल्यों को आत्मसात करके, लोग जीवन की चुनौतियों का सामना कर सकते हैं और अपनी सबसे गहरी, सबसे पोषित आकांक्षाओं को पूरा कर सकते हैं।

मूल्य कई पहलुओं को समाहित करते हैं, जिनमें व्यक्तिगत प्राथमिकताएँ, सामाजिक मानदंड, संपत्तियाँ, व्यक्तित्व विशेषताएँ और मानसिक स्थितियाँ शामिल हैं। प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि वे इस बात को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं कि शिक्षक छात्रों के चरित्र, नैतिकता और दृष्टिकोण को कैसे आकार देते हैं। शिक्षकों के मूल मूल्यों को समझकर, हम कक्षा के वातावरण, छात्र विकास और समग्र शैक्षिक अनुभव पर उनके प्रभाव को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं।

मूल्यों की आवश्यकता एवं महत्त्व

प्राचीन शिक्षा सत्य, सौंदर्य और अच्छाई के विकास के माध्यम से आत्म–साक्षात्कार की खोज पर केंद्रित थी। इसमें मानवीय मूल्यों के विकास, सकारात्मक व्यवहार और नैतिक निष्ठा को प्रोत्साहित करने पर ज़ोर दिया जाता था। इन आदर्शों को स्थापित करके, इसका उद्देश्य व्यक्तिगत विकास और सामाजिक प्रगति को बढ़ावा देना था, और अंततः एक सामंजस्यपूर्ण और शांतिपूर्ण समुदाय का निर्माण करना था जहाँ व्यक्ति एक–दूसरे और प्राकृतिक दुनिया के साथ संतुलन में रहें।

मूल्यों के आयाम

मूल्य महत्वपूर्ण, वांछनीय लक्ष्यों के रूप में कार्य करते हैं जो मानव व्यवहार को प्रभावित और निर्देशित करते हैं, व्यक्तियों को निर्णय लेने और कार्यों को प्राथमिकता देने में मदद करते हैं। पूरे इतिहास में, मानव जीवन में इन मूलभूत मार्गदर्शक सिद्धांतों को बेहतर ढंग से समझने और उनका विश्लेषण करने के लिए कई वर्गीकरण प्रणालियाँ विकसित की गई हैं।

क) पारंपरिक मूल्य जिनमें शामिल हैंः– 1) प्यूरिटन नैतिकता – जिम्मेदारी, मितव्ययिता, आत्म–त्याग और यौन संयम का प्रतीक है। 2) सफलता कडी मेहनत और दृढ निश्चय, दृढता और लक्ष्यों के प्रति अटूट समर्पण से मिलती है। 3) व्यक्तिवाद का अर्थ है कि व्यक्ति पवित्र है और हमेशा समूह से अधिक महत्वपूर्ण है। 4) उपलब्धि अभिविन्यास का अर्थ है कि सफलता एक निरंतर लक्ष्य है जो भविष्य उन्मुख होना चाहिए।

(ख) उभरते मूल्य जिनमें शामिल हैंः– 1) मिलनसारिता – व्यक्ति को लोगों को पसंद करना चाहिए और उनके साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए। 2) सापेक्षवादी नैतिक दृष्टिकोण – समूह जो सही समझता है वही नैतिकता है। यह मूल्य "चाहिए" की उपेक्षा करता है। 3) दूसरों के प्रति विचारशीलता। 4) सुखवादी वर्तमान समय अभिविन्यास – व्यक्ति को एक संतुलित व्यक्तित्व की सीमाओं के भीतर वर्तमान का आनंद लेना चाहिए, और 5) स्वीकार्य होने और शामिल महसूस करने के लिए, व्यक्ति अक्सर समूह के मानदंडों और सामाजिक अपेक्षाओं के अनुरूप कार्य करते हैं।

मूल्यों में भेद

मूल्य मूलभूत सांस्कृतिक सिद्धांत हैं जो व्यवहार के लिए मार्गदर्शक नियमों और व्यापक लक्ष्यों के रूप में कार्य करते हैं। ये अमूर्त विचारों को मूर्त रूप देते हैं कि क्या होना चाहिए, और व्यक्तियों के कार्यों और निर्णयों को आकार देते हैं। इन मूल्यों को विभिन्न प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है, और ये जीवन और सामाजिक कार्यप्रणाली के विभिन्न पहलुओं पर लागू होते हैं।

1. **नैतिक मूल्य**
2. **लोकतांत्रिक मूल्य**
3. **धार्मिक मूल्य**
4. **स्वास्थ्य मूल्य**
5. **सामाजिक मूल्य**
6. **आर्थिक मूल्य**

शिक्षा और मूल्य

शैक्षिक मूल्य व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के लिए निम्नलिखित लाभ प्रदान करते हैंः–

- व्यक्तित्व का स्वस्थ और संतुलित विकास।
- कमाने की क्षमता और अर्जित भौतिक व्यक्तित्व।
- व्यावसायिक दक्षता का विकास।
- अच्छे नागरिक का निर्माण।
- पर्यावरण के साथ समायोजन और उसका परिवर्तन मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति।
- चरित्र का विकास।
- राष्ट्रीय एकीकरण और राष्ट्रीय विकास।
- सामाजिक दक्षता को बढ़ावा देना, आदि।

2. शोध उद्देश्य एवं परिकल्पनाऐं

शोध उद्देश्य

1. शैक्षिक योग्यता प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के मूल्यों को किस प्रकार प्रभावित करती है इसका अध्ययन करना।
2. शिक्षण अनुभव कि प्रकार प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के मूल्यों को प्रभावित करती है इसका अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाऐं

- शैक्षिक योग्यता शिक्षकों की छात्रों को प्रतिदिन प्रेरित करने और प्रभावी ढंग से शिक्षित करने की क्षमता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित नहीं करती है।
- शिक्षण अनुभव कक्षा में शिक्षकों की प्रभावशीलता या समग्र प्रदर्शन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित नहीं करता है।

3. शोध विधि

वर्तमान शोध भारत के उत्तरप्रदेश राज्य के जौनपुर जिले के ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों के सरकारी एवं निजी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों के 600 शिक्षकों का चयन किया गया है जो वर्तमान में चयनित महाविद्यालयों में अध्यापन का कार्य कर रहे हैं। चयनित 600 शिक्षकां में से 300 सरकारी विद्यालयों से एवं 300 निजी क्षेत्र के विद्यालयों से चयनित किये गये हैं। चयनित 600 उत्तरदाताओं में से 300 महिला शिक्षक एवं 300 पुरूष शिक्षक चुने गये हैं। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के स्कूलों से चयनित उत्तरदाता एक समान संख्या में लिये गये हैं। उत्तरदाताओं के चयन के लिये जौनपुर जिले की सभी 6 तहसीलों में कार्यरत प्राथमिक शिक्षकों का चयन किया गया है। चूंकि अध्ययनकर्ता जौनपुर जिले का मूल निवासी है एवं स्वयं भी इसी जिले में अध्यापन के कार्य में लगा हुआ है।

शोध उपकरण

अध्ययन के लिए एक वर्णनात्मक दृष्टिकोण और तुलनात्मक सर्वेक्षण डिजाइन अपनाया गया है। शोध अध्ययन दिसम्बर 2023 से सितम्बर 2025 के बीच पूरा किया गया गया है। अध्ययन क्षेत्र उत्तरप्रदेश राज्य का जौनपुर जिला ही रखा गया है। अध्ययन के दौरान उत्तरदाताओं के साक्षात्कार के लिये प्रश्नावली के माध्यम से नमूनों का संग्रह किया गया है। प्रश्नावली का निर्माण केवल हिंदी भाषा में किया गया है क्योंकि क्षेत्र में अधिकांश उत्तरदाताओं के बीच बोली जाने वाली प्रचलित भाषा हिंदी ही है।

आंकड़ों का विश्लेषण

इस अध्ययन में, टी–परीक्षण, एफ–परीक्षण, चतुर्थक गणना और स्टैन मान जैसी उपयुक्त तकनीकों का उपयोग करके सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया।

4. विश्लेषण एवं परिणाम

शैक्षिक योग्यता

इस अध्ययन का उद्देश्य डी.एड. डिग्री धारक प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के मूल्यों पर शैक्षिक योग्यता के प्रभाव का पता लगाना था। उत्तरदाताओं को योग्यतानुसार दो वर्गों में रखा गया है। यह निर्धारित करने के लिए कि क्या उनके मूल्य प्रणालियों में अंतर मौजूद है, उनके संबंधित मूल्य स्कोर पर टी–परीक्षण किए गए। प्राथमिक लक्ष्य इस परिकल्पना का परीक्षण करना था कि शैक्षिक योग्यता का स्तर शिक्षकों के मूल मूल्यों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है, जिससे यह समझने में मदद मिलती है कि व्यावसायिक प्रशिक्षण शैक्षिक दृष्टिकोण और सिद्धांतों को कैसे आकार देता है।

शोध से पता चलता है कि शैक्षिक योग्यताएं प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के मूल मूल्यों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित नहीं करती हैं, तथा यह सुझाव देती हैं कि व्यक्तिगत चरित्र और अनुभव उनके व्यावसायिक सिद्धांतों को आकार देने में अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। परिणाम नीचे दी गई तालिका में प्रस्तुत किए गए हैं।

तालिका 1 – प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के मूल्यों पर शैक्षिक योग्यता का प्रभाव

चर	औसत		मानक विचलन		'टी'–मान
	डी.एड.	बी.एड.	डी.एड.	बी.एड.	
नैतिक मूल्य	63.92	64.28	6.622	6.409	0.256@
लोकतांत्रिक मूल्य	50.08	51.37	6.180	6.371	2.737**
धार्मिक मूल्य	43.38	45.05	7.322	7.782	3.645**
स्वास्थ्य मूल्य	56.79	56.99	6.775	6.596	0.114@
सामाजिक मूल्य	54.61	54.57	6.335	6.720	2.722**
आर्थिक मूल्य	39.82	39.61	6.004	6.317	0.088@
कुल मूल्य	308.60	311.86	21.765	21.416	1.546@

नोटः @ 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है ** 0.01 स्तर पर सार्थक दर्शाता है

उपरोक्त तालिका के अनुसार, परिकलित टी–मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.59 के महत्वपूर्ण मान से अधिक हैं। परिणामस्वरूप, 'शैक्षिक योग्यता' से संबंधित परिकल्पना 5 अस्वीकृत होती है। यह निष्कर्ष बताता है कि अध्ययन के संदर्भ में शैक्षिक योग्यता से संबंधित एक सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर है। इसका तात्पर्य यह है कि शैक्षिक योग्यता का जाँचे जा रहे चर पर सार्थक प्रभाव पडता है, जो प्रेक्षित परिणामों को प्रभावित करने में इसके महत्व को दर्शाता है।

तालिका संख्या 1 के अनुसार, परिकलित 'टी' मान 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.96 के महत्वपूर्ण मान से नीचे हैं। यह सांख्यिकीय परिणाम बताता है कि शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्राथमिक विद्यालय के प्रदर्शन में कोई सार्थक अंतर नहीं है। दूसरे शब्दों में, आँकडे दर्शाते हैं कि शैक्षिक योग्यता का छात्रों के प्राथमिक विद्यालय के परिणामों पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पडता है, जिससे अन्य प्रभावशाली कारकों पर विचार करने की आवश्यकता उजागर होती है।

शिक्षण अनुभव

अध्ययन का उद्देश्य यह पता लगाना था कि शिक्षण अनुभव प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के मूल्यों को कैसे प्रभावित करता है। इस उद्देश्य के लिए, शिक्षकों को उनके सेवाकाल के आधार पर तीन अलग–अलग समूहों में विभाजित किया गयाः 12 वर्ष तक के अनुभव वाले, 13 से 23 वर्ष के अनुभव वाले, और 23 वर्ष से अधिक के अनुभव वाले। शोधकर्ताओं ने यह निर्धारित करने का प्रयास किया कि क्या शिक्षण अवधि में अंतर शिक्षकों के मूल मूल्यों में भिन्नता के अनुरूप है। इसे प्राप्त करने के लिए, शिक्षकों के मूल्यों को दर्शाने वाले अंक एकत्रित किए गए और एक–तरफा एनोवा का उपयोग करके तीनों समूहों में उनका विश्लेषण किया गया। इस सांख्यिकीय पद्धति ने अनुभव के स्तर के आधार पर मूल्यों में किसी भी महत्वपूर्ण अंतर की पहचान करने में मदद की, जिससे यह जानकारी मिली कि कार्यकाल शिक्षकों के दृष्टिकोण और पेशेवर नैतिकता को कैसे प्रभावित कर सकता है।

तालिका 2 – प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के मूल्यों पर शिक्षण अनुभव का प्रभाव

चर	औसत (शैक्षिक अनुभव वर्ष)			मानक विचलन			'एफ'–मान
	<12	13–23	>23	<12	13–23	>23	
नैतिक मूल्य	64.17	64.36	63.42	6.572	6.181	6.823	0.562@

लोकतांत्रिक मूल्य	50.78	51.13	51.15	6.479	6.409	5.28	0.237@
धार्मिक मूल्य	44.40	44.61	44.16	7.667	7.643	7.526	0.096@
स्वास्थ्य मूल्य	56.74	57.31	56.89	6.747	6.738	6.271	0.434@
सामाजिक मूल्य	54.45	55.08	54.81	6.814	6.439	5.934	0.573@
आर्थिक मूल्य	39.80	39.24	40.30	6.129	6.273	5.978	0.920@
कुल मूल्य	310.35	311.73	310.74	22.554	20.404	19.296	0.251@

नोटः @ 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है ** 0.01 स्तर पर सार्थक दर्शाता है

0.01 स्तर पर 1 और 597 डीएफ के लिए 'एफ' का सारणी मान 4.63 है और 0.05 स्तर पर 3.00 है।

तालिका संख्या 2 के अनुसार, विश्लेषण दर्शाता है कि शिक्षण अनुभव से संबंधित सभी परिकलित एफ मान 0.05 सार्थकता स्तर पर 3. 00 के क्रांतिक मान से कम हैं। यह दर्शाता है कि प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के नैतिक विकास में उनके शिक्षण अनुभव के वर्षों के आधार पर कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं है। दूसरे शब्दों में, ऑकडे बताते हैं कि शिक्षण अनुभव का शिक्षकों के नैतिक गुणों पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पडता है। इसलिए, अनुभव के अलावा अन्य कारक शिक्षकों के नैतिक चरित्र को आकार देने में अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। शैलजा (2002) ने पाया है कि शिक्षकों के नैतिक मूल्यों पर शिक्षण अनुभव का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पडता है। परिणाम राजशेखर (1998) के विपरीत था। पारंपरिक और औपचारिक रूप से यह कहा जा सकता है कि एक शिक्षक के पास शिक्षण अनुभव की मात्रा का उनके नैतिक मूल्यों या नैतिक सिद्धांतों पर कोई उल्लेखनीय प्रभाव नहीं पडता है।

5. विश्लेषण एवं चर्चा

मानक शैली में, स्थानीयता प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के आर्थिक अवसरों, वेतन और समग्र व्यावसायिक विकास की संभावनाओं को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है।

पारंपरिक शैक्षिक ढांचे में, लिंग प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के कथित आर्थिक मूल्य को उल्लेखनीय रूप से प्रभावित करता है।

शैक्षिक योग्यता शिक्षकों के लोकतांत्रिक, धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है, तथा कक्षा की कार्यप्रणाली और छात्र अंतःक्रियाओं के प्रति उनके दृष्टिकोण को आकार देती है।

6. निष्कर्ष

शैक्षिक योग्यता प्राथमिक शिक्षकों के लोकतांत्रिक सिद्धांतों और धार्मिक समझ को प्रभावित करती है, तथा उनके पेशेवर दृष्टिकोण और कक्षा में अंतःक्रिया को आकार देती है। शिक्षण योग्यताएं प्राथमिक शिक्षकों की धार्मिक समझ और सामाजिक अंतःक्रियाओं को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं, तथा अंततः छात्रों के नैतिक विकास और सामुदायिक सहभागिता को आकार देती हैं। शिक्षण अनुभव शिक्षकों के नैतिक मूल्यों और लोकतांत्रिक दृष्टिकोण को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो अंततः उनके पेशेवर व्यवहार और कक्षा के वातावरण को प्रभावित करता है। उच्च शैक्षणिक योग्यताएँ प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के लोकतांत्रिक, धार्मिक और सामाजिक मूल्यों को आकार देने और उन्हें एक कुशल और जिम्मेदार शिक्षक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसलिए, प्रशासकों को कम योग्यता वाले शिक्षकों को सहायता प्रदान करने के लिए लक्षित शैक्षिक अवसर और व्यावसायिक विकास कार्यक्रम प्रदान करने को प्राथमिकता देनी चाहिए, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे अपने ज्ञान में वृद्धि करें और विद्यालय के सकारात्मक वातावरण और छात्रों के विकास में प्रभावी योगदान दें। उच्च शिक्षण क्षमता प्रदर्शित करने वाले प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक अधिक सकारात्मक मूल्यों को अपनाते हैं और छात्रों के लिए आदर्श बनते हैं। एक प्रभावी शैक्षिक वातावरण को बढ़ावा देने के लिए, प्रशासकों को स्कूल के बुनियादी ढाँचे और संसाधनों में सुधार करने में निवेश करना चाहिए, जिससे कम क्षमता वाले शिक्षकों को सहायता मिले और सीखने और विकास के लिए एक अधिक न्यायसंगत, अनुकूल वातावरण सुनिश्चित हो।

7. संदर्भ सूचि

1. **आहूजा मालविंदर (2007),** "शिक्षकों की उनके अनुभव और विषय क्षेत्र के अनुसार सामाजिक मूल्यों पर प्राथमिकताएँ", ईडीआईआई पुस्तकालय और सूचना केंद्र, पृष्ठ 11–17
2. **ऑलपोर्ट, जी.एस., वर्नोन, पी.ई., और लिंजी, जी. (1960),** "मूल्यों के अध्ययन के लिए मैनुअल", बोस्टन, ह्यूटन मिफ्लिन कंपनी।
3. **ऑलपोर्ट, गॉर्डन, डब्ल्यू. और वर्नोन, फिलिप, ई. (1931),** "मूल्यों का एक अध्ययन।", दिशा–निर्देश मैनुअल, बोस्टनः ह्यूटन मिफ्लिन कंपनी।
4. **उमरान साहिन (2019),** "प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक उम्मीदवारों द्वारा अपेक्षित मूल्य और मूल्य शिक्षा", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ प्रोग्रेसिव एजुकेशन, खंड–15, अंक–3, पृष्ठ–74–90
5. **बस्सी और कौर (1991),** "भाषा शिक्षकों की शिक्षण योग्यता का उनके कार्य संतुष्टि, नियंत्रण के स्थान और पेशेवर बर्नआउट के संबंध में" Custom writings.com. http://education&edge.com.
6. **चेन्नमसेट्टी रमेश और मांडव नीलिमा (2019),** "प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षक योग्यता पर एक अध्ययन", रिसर्च रिव्यू इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी, खंड–04, अंक–01, पृष्ठ–2086–2088, आईएसएसएन–2455–3085 (ऑनलाइन)
7. **दत्ता रूपनार (2017),** शिक्षक प्रभावशीलता और संबंधित विशेषताएँः एक व्यवस्थित समीक्षा", द ऑनलाइन जर्नल ऑफ न्यू होराइजन्स इन एजुकेशन – जनवरी 2017, खंड–7, अंक–1

8. **जेनेट पॉवनी, एट अल. (1996),** "प्राथमिक विद्यालय में मूल्यों की शिक्षा को समझना।", आईएसबीएन 1 86003 013 0.
9. **जेबा, ए. (2005),** "डाइट में छात्र शिक्षकों की शिक्षण योग्यता और मानसिक स्वास्थ्य।", शिक्षा में प्रयोग, सीटू, मद्रास, खंड 30, अंक 3, पृष्ठ–137–141
10. **कौल, जी.एन. (1988),** "स्वतंत्र भारत में मूल्य और शिक्षा", द एसोसिएटेड पब्लिशर्स, अंबाला कैंट, भारत।